

भारत का चीनी नरियात

पाँच वर्ष पहले तक भारत एक मामूली चीनी नरियातक था, कति अबवशिव में चीनी नरियात के संदर्भ में दूसरे पायदान पर पहुँच गया है, पहले स्थान पर ब्राज़ील है। वर्ष 2017-18 और 2021-22 के बीच नरियात 810.9 मिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 4.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया है।

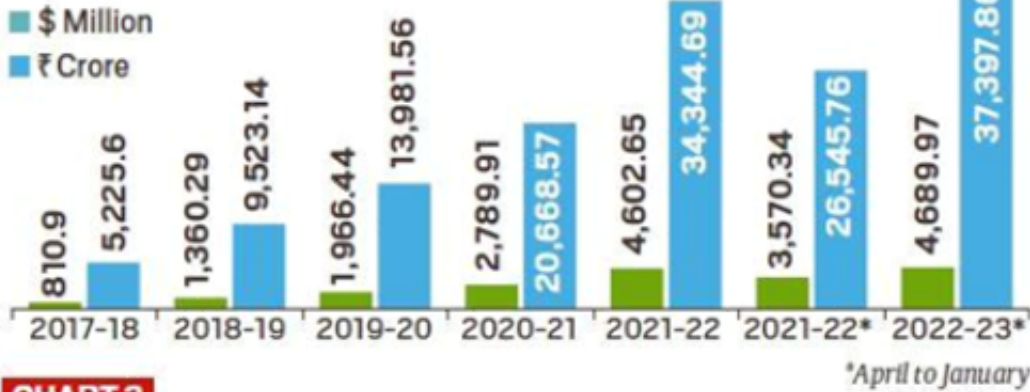
- वर्तमान वक्ति वर्ष में **चीनी का नरियात** 5.5 अरब डॉलर को पार कर सकता है।

भारत में चीनी उद्योग की स्थिति:

- परचिय:**
 - चीनी उद्योग एक महत्त्वपूर्ण **कृषि-आधारित उद्योग** है जो लगभग 50 मिलियन गन्ना किसानों की ग्रामीण आजीविका का आधार है और लगभग 5 लाख श्रमिक प्रत्यक्ष तौर पर चीनी मलों में कार्यरत हैं।
 - अक्टूबर 2021 से सितंबर 2022 में भारतवशिव में चीनी का सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता तथा वशिव में चीनी का दूसरा सबसे बड़ा नरियातक बनकर उभरा है।
- वतिरण:**
 - चीनी उद्योग मोटे तौर पर **उत्पादन के दो प्रमुख कषेत्रों में वतिरति** है- उत्तर में उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा और पंजाब तथा दक्षिण में महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश।
 - दक्षिण भारत में **जलवायु उषणकटबिंधीय** है जो उत्तर भारत की तुलना में प्रतईकाई कषेत्र में अधिक उपज देने वाली उच्च सुक्रोज सामग्री के लिये उपयुक्त है।
- चीनी के विकास के लिये भौगोलिक स्थितियाँ:**
 - तापमान:** ऊष्ण और आर्द्र जलवायु के साथ 21-27 डिग्री सेल्सियस के बीच।
 - वर्षा:** लगभग 75-100 से.मी.।
 - मृदा का प्रकार:** समृद्ध दोमट मट्टि।

चीनी नरियात की स्थिति:

- पृष्ठभूमि:**
 - वर्ष 2017-18 तक भारत ने शायद ही कोई **कच्ची चीनी** (गन्ने के रस के पहले क्रस्टलीकरण के बाद उत्पादित) का नरियात किया।
 - इसने मुख्य रूप से 100-150 ICUMSA मूल्य (चीनी वशिलेषण के समान तरीकों के लिये अंतर्राष्ट्रीय आयोग) के साथ सफेद चीनी (कच्ची चीनी के शोधन द्वारा उत्पादित) का नरियात किया। इसे अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में कम गुणवत्ता वाले व्हाइट(White) या LQW के रूप में जाना जाता था।
 - ICUMSA शुद्धता का एक मानक है। मूल्य जतिना कम होगा, सफेदी उतनी ही अधिक होगी।
- वर्तमान स्थिति:**
 - वर्ष 2021-22 में भारत के कुल 110 लाख टन चीनी नरियात में से अकेले कच्ची चीनी का हसिसा 56.29 लाख टन था।
 - भारतीय कच्ची चीनी के सबसे बड़े आयातक इंडोनेशिया (16.73 लाख टन), बांग्लादेश (12.10 लाख टन), सऊदी अरब (6.83 लाख टन), इराक (4.78 लाख टन) और मलेशिया (4.15 लाख टन) थे।

CHART 1**INDIA'S SUGAR EXPORTS IN VALUE****CHART 2****INDIA'S SUGAR EXPORTS IN LAKH TONNES**

Sugar Year	Raw Sugar	White Sugar***	Total
2016-17	0	0.46	0.46
2017-18	0.47	5.73	6.2
2018-19	13.13	24.87	38
2019-20	17.84	41.56	59.4
2020-21	28.16	43.74	71.9
2021-22	56.29	53.71	110
2022-23**	19.13	30.91	50.04

Note: Sugar Year is from Oct-Sept

As on March 15; *Includes refined sugar

■ **बढ़ते निर्यात का कारण:**

- बैक्टीरियल योगिक से मुक्त: भारतीय कच्ची चीनी डेक्सट्रान से मुक्त होती है तथा बैक्टीरियल योगिक तब बनता है जब कटाई के बाद बहुत देर तक गन्ना धूप में रहता है।
 - भारतीय गन्ने की कटाई के 12-24 घंटों के भीतर पेराई की जाती है, जबकि ब्राज़ील में लगभग 48 घंटे लगते हैं।
- उच्च सुक्रोज सामग्री: ब्राज़ील, थाईलैंड और ऑस्ट्रेलिया जैसे अन्य उत्पादकों की तुलना में भारतीय कच्ची चीनी में उच्च पोलराइज़ेशन (Polarization) (98.5-99.5%) होता है, जिससे इसे परष्कृत करना आसान और सस्ता हो जाता है।
 - पोलराइज़ेशन कच्ची चीनी में मौजूद सुक्रोज का प्रतशित है।

■ **सीमति निर्यात:**

- वर्ष 2021-22 में कम स्टॉक और उत्पादन में कमी के कारण सरकार ने घरेलू उपलब्धता सुनिश्चिती करने के लिये चालू चीनी वर्ष में भारत के निर्यात को 61 लाख टन तक सीमति कर दिया है।
 - सरकार ने घरेलू उपलब्धता की गारंटी देने और खाद्य मुद्रास्फीति पर लगाम लगाने के लिये ये कदम उठाए लेकिन दिशि बाज़ार एक बार खो जाने के बाद फरि से हासलि करना आसान नहीं है।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

प्रश्न. भारत में गन्ने की खेती में वर्तमान प्रवृत्तियों के संदर्भ में नमिनलखिति कथनों पर वचिार कीजयि: (2020)

1. जब 'बड चपि सैटलगिस (Bud Chip Settlings)' को नर्सरी में उगाकर मुख्य कृषि भूमि में प्रतरिपति कयिा जाता है, तब बीज सामग्री में बड़ी बचत होती है।
2. जब सैटस का सीधे रोपण कयिा जाता है, तब एक-कलकि (Single-Budded) सैटस का अंकुरण प्रतशित कई-कलकि (Many Budded) सैटस की तुलना में बेहतर होता है।

3. खराब मौसम की दशा में यदि सैट्स का सीधे रोपण होता है, तब एक-कलिका सैट्स का जीवति बचना बड़े सैट्स की तुलना में बेहतर होता है।
4. गन्ने की खेती ऊतक संवर्द्धन से तैयार की गई सैटलिंग से की जा सकती है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 और 2
(b) केवल 3
(c) केवल 1 और 4
(d) केवल 2, 3 और 4

उत्तर: C

व्याख्या:

- टिशू कल्चर एक ऐसी तकनीक है जिसमें पौधों को टुकड़ों को काटा और तैयार किया जाता है तथा एक प्रयोगशाला में उगाया जाता है।
 - यह मौजूदा व्यावसायिक कस्मों के रोग मुक्त गन्ने का तेज़ी से उत्पादन और आपूर्तिका एक नया तरीका प्रदान करता है।
 - यह मातृ पौधे को क्लोन करने के लिये मेरसिस्टेम का उपयोग करता है।
 - यह आनुवंशिक पहचान को भी संरक्षित करता है।
 - टिशू कल्चर तकनीक, अत्यधिक खर्चीली और भौतिक सीमाओं के कारण गैर-आर्थिक हो रही है।
- **बड चपि प्रौद्योगिकी:**
 - टिशू कल्चर के व्यवहार्य विकल्प के रूप में यह द्रव्यमान को कम करती है और बीजों के त्वरति गुणन को संक्षम बनाती है।
 - यह वधिदो से तीन कली सैट्स लगाने की पारंपरिक वधिकी तुलना में अधिक कफायती और सुविधाजनक साबति हुई है।
 - रोपण के लिये उपयोग की जाने वाली बीज सामग्री पर पर्याप्त बचत के साथ प्रतलिभ अपेक्षाकृत बेहतर है। **अतः कथन 1 सही है।**
- शोधकर्त्ताओं ने पाया है ककलियों वाले सैट्स बेहतर उपज के साथ लगभग 65 से 70% अंकुरति हो सकते हैं। **अतः कथन 2 सही नहीं है।**
- खराब मौसम के प्रतबड़े सैट्स अधिक सहषिणु होते हैं लेकिन रासायनिक उपचार से संरक्षति होने पर एकल कली सैट्स भी 70% ही अंकुरति हो सकते हैं। **अतः कथन 3 सही नहीं है।**
- टिशू कल्चर का उपयोग गन्ने को अंकुरति करने और उगाने के लिये किया जा सकता है जसि बाद में खेत में प्रत्यारोपति किया जा सकता है। **अतः कथन 4 सही है।**
- **अतः विकल्प (c) सही उत्तर है।**

??????:

प्रश्न. क्या आप इस बात से सहमत हैं कि भारत के दक्षिणी राज्यों में नई चीनी मिलें खोलने की प्रवृत्ति बढ़ रही है? न्यायसंगत वविचन कीजिये। (2013)

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस